टिप्पणी

# 19

# सुगम पारगमन

जन्म से आठ वर्ष की आयु के बीच बच्चों की शिक्षा में अनेक महत्वपूर्ण पारगमन होते हैं। जब तक छोटे बच्चे पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्कूल में प्रवेश करते हैं, वे विभिन्न पारगमनों एवं बदलावों से गुजरते हैं। हो सकता है कि वे किसी बाल देखभाल केंद्र, खेल समूह, आंगनवाड़ी, बालवाड़ी अथवा प्री-स्कूल गए हों। प्रत्येक बच्चा इस प्रकार की चुनौतियों के लिए अलग ही तरीके से प्रतिक्रिया करता है और घर से पूर्व-प्राथमिक विद्यालय और पूर्व-प्राथमिक विद्यालय से प्राथमिक विद्यालय में होने वाले पारगमन से प्रारंभिक रूप में तदनुसार निपटता है। इस प्रक्रिया के दौरान यह जानना अति आवश्यक है कि बच्चों में यह पारगमन सुगमता से हो रहा है अथवा नहीं। वे चुनौतियों और नये वातावरण से निरंतर समायोजन करना सीखते रहते हैं।

प्री-स्कूल अथवा किंडरगार्टन की शुरुआत ऐसा पारगमन है जो बच्चों के लिए कई परिवर्तन होकर आता है। यह एक बड़े परिवर्तन की स्थिति है, जिसमें बच्चा न केवल एक नये वातावरण में कदम रखता है, बल्कि उसे एक अपरिचित एवं नये परिवेश के साथ अनुकूलन भी करना पड़ता है। जिस समय बच्चे स्कूल में जाना प्रारंभ करते हैं वह अवधि उनके विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकती है क्योंकि यह उनकी स्कूल में सहभागिता के स्तर को प्रभावित कर सकती है और भविष्य में इससे बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि भी प्रभावित हो सकती है।

अधिकांश बच्चे अपनी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर सफलतापूर्वक पारगमन कर लेते हैं हालांकि कुछ बच्चों को अपनी दैनिक दिनचर्या में हुए ये परिवर्तन अपने साथियों की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण लगते हैं। जो बच्चे कठिनाइयों का अनुभव करते है, हो सकता है कि वे कमजोर समूहों से आते हों, उदाहरणार्थ अपेक्षाकृत अधिक वंचित समूह अथवा विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बच्चे। खराब सामाजिक संवेगात्मक कौशल, आत्म-सम्मान अथवा आत्म-विश्वास का निम्न स्तर रखने वाले बच्चे घर से स्कूल में पारगमन करते समय अतिसंवेदनशील हो सकते हैं क्योंकि उनमें उन कौशलों का अभाव होता है जो उन्हें नये परिवेश एवं सामाजिक संबंधों की अपेक्षाओं की पूर्ति में सहायक होते हैं। ऐसे बच्चे जो कभी किसी बाल्य-देखभाल केन्द्र, खेल समूह, आंगनवाड़ी, बालवाड़ी अथवा प्री-स्कूल में नये हों उनके पास अपने सामाजीकरण और भावनाओं के प्रबंधन के सीमित अवसर होते हैं। उनमें एक सफल शुरुआत और स्कूल के वातावरण एवं परिस्थितियों में उपयुक्त प्रतिक्रिया करने की योग्यता हेतु

टिप्पणी

आवश्यक क्षमताओं का अभाव हो सकता है। घर से स्कूल में सुगम पारगमन अति महत्वपूर्ण है, क्योंकि अनुसंधान द्वारा यह प्रमाणित किया जा चुका है कि खराब पारगमन एवं कम सफल परिणाम आपस में संबंधित हैं। इसके अतिरिक्त, कम सफल पारगमन, स्कूल में कम उपस्थिति एवं बाद में शिक्षा में कम सहभागिता के लिए भी उत्तरदायी हो सकता है।

## अधिगम प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- पारगमन एवं तत्परता का अर्थ बताते हैं;
- पूर्व-प्राथमिक तत्परता एवं स्कूल तत्परता के मध्य अन्तर करते हैं;
- स्कूल तत्परता के अर्थ, घटकों एवं महत्व को वर्णन करते हैं;
- बच्चों के घर से प्री-स्कूल/स्कूल में सुगम पारगमन में अभिभावकों, स्कूल, अध्यापकों एवं अन्य देखभालकर्ताओं की भूमिका का वर्णन करते हैं; और
- स्कूल तत्परता के विभिन्न घटकों हेतु गतिविधियों की पहचान करते हैं।

## 19.1 पारगमन को समझना

पारगमन वह प्रक्रिया है, जो एक स्थिति से दूसरी में परिवर्तन की अवधि को इंगित करती है। घर से स्कूल में पारगमन वह कदम है जो छोटे बच्चे घर से प्रीस्कूल अथवा प्रीस्कूल से प्राथमिक स्कूल के लिए लेते हैं। घर से प्रीस्कूल में पारगमन लगभग तीन साल की आयु में होता है। पारगमन अभिभावकों के लिए भी कठिन हो सकता है, किंतु पारगमन की अवधि के दौरान स्कूल के प्रयास, उनके तनाव एवं चिंता को कम करने में सहायक हो सकते हैं। परिवर्तन का प्रबंधन सीखने के लिए कुछ विशेष कौशलों की आवश्यकता होती है। ऐसे अनेक तरीके हैं, जिनके द्वारा हम बच्चों एवं उनके परिवारों की यह जानने में मदद कर सकते हैं कि पारगमन का सामना किस प्रकार करें। एक तरीका यह है कि इन्हें अपेक्षित परिवर्तन की पूर्व जानकारी प्रदान कर दी जाए।

पूर्व बाल्यावस्था में घर से स्कूल में सहज पारगमन किस प्रकार किया जा सकता है? यह प्रमाणित है कि कृमिक परिवर्तन एवं परिचितिकरण का सुझाव सहायक होता है। ऐसे बच्चे जो प्राथमिक स्कूल शुरु करने से पूर्व किसी बाल्य देखभाल केन्द्र, खेल समूह, आंगनवाड़ी, बालवाड़ी अथवा प्रीस्कूल या प्रारंभिक वर्षों के अन्य किसी परिवेश में गये हों, उनको भी शिक्षण विधियों एवं पाठयक्रम की निरंतरता के संबंध में चुनौतियों का अनुभव हो सकता है। इसमें औपचारिक शिक्षण एवं अधिगम शैली में अचानक परिवर्तन, कार्य पर अत्यधिक बल देना, खेलने का कम समय, और बाल-सुलभ गतिविधियों के कम अवसर आदि सम्मिलित हैं। पारगमन प्रक्रिया के दौरान बच्चों एवं परिवारों को सहयोग एवं परामर्श की कमी उनके द्वारा अनुभव की जाने वाली पारगमन समस्याओं के स्तर को बढ़ा सकती है।

शोध से यह प्रकट होता है कि शैशवकाल से ही, बच्चे परिचित वयस्कों से संवेगात्मक संबंध एवं लगाव विकसित कर लेते हैं। परिचित वयस्कों के साथ विश्वसनीय संबंध बच्चों को सुरक्षा, आराम और एक मजबूत आधार प्रदान करता है, जो उन्हें नये वातावरण को जानने और सीखने में सहायक होता है। वयस्कों एवं अन्य बच्चों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने की योग्यता चुनौतीपूर्ण हैं, किन्तु पारगमन के दौरान बच्चों के स्वस्थ समायोजन हेतु यह आवश्यक है। यह नयी अथवा कठिन परिस्थितियों में, जब बच्चों को देखभालकर्ताओं के आश्वासन एवं सहयोग की आवश्यकता होती है, विशेष रूप से सत्य है। घर से स्कूल अथवा एक प्रारंभिक शिक्षा परिवेश से दूसरे परिवेश में पारगमन के दौरान बच्चों को अपने परिवारों अथवा परिचित देखभालकर्ताओं से अलग होना पड़ता है और नये, अपरिचित वयस्कों से सुरक्षित संबंध विकसित करने की आवश्यकता होती है। उन्हें नये वातावरण में दूसरे बच्चों के साथ भी संबंध बनाने की आवश्यकता होती है। बच्चे पारगमन का सर्वोत्तम प्रबंधन जब करते हैं, जब वयस्क उन्हें अपना सहयोग प्रदान करते हैं।

### 19.1.1 पारगमन को प्रभावित करने वाले कारक

पारगमन के प्रति बच्चों की प्रतिक्रिया में व्यैक्तिक भिन्नता की अहम भूमिका है। जहाँ कुछ बच्चे नये वातावरण में आसानी से समायोजित हो जाते हैं, वहीं दूसरे बच्चों को नये वातावरण से अनुकूलन हेतु अधिक समय की आवश्यकता होती है।

प्रत्येक बच्चे का स्वभाव अलग हैं और विभिन्न परिस्थितियों के प्रति उनकी भावात्मक प्रतिक्रिया की तीव्रता में भी भिन्नता होती है। यह उनके पारगमन के दौरान समायोजन को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है। कई बच्चों के लिए दैनिक जीवन में नयी परिस्थितियों और नये लोगों से अनुकूलन करना कठिन होता है। इन बच्चों के लिए नये अधिगम वातावरण में पारगमन चुनौतीपूर्ण हो सकता है। उनके द्वारा अपनी भावनाओं के प्रबंधन हेतु प्रयुक्त की गयी युक्तियाँ जो उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित होती हैं, भी भिन्न-भिन्न हो सकती हैं। इसलिए बच्चों का स्कूल में सफलतापूर्वक पारगमन निम्नलिखित बातों पर निर्भर करता है–

1. उनकी अपनी व्यक्तिगत विशेषताएं (जैसे– स्वभाव, व्यक्तित्व)
2. अभिभावकों की विशेषताएं (जैसे– जागरूकता, शिक्षा, स्कूल के प्रति दृष्टिकोण)
3. समुदाय की विशेषताएं (जैसे- स्थानीय सेवाओं की पहुँच एवं गुणवत्ता)

जो बच्चे आर्थिक रूप से वंचित परिवारों, देशज परिवारों, विकलांग बच्चों वाले परिवारों और सांस्कृतिक एवं भाषायी विविधता वाले परिवारों से संबंधित हैं, उनके लिए स्कूल में पारगमन और भी अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है। इन पृष्ठभूमियों वाले बच्चों में स्कूल प्रारंभ करने से पहले पूर्व-बाल्यकालीन शिक्षा और देखभाल सेवाओं में भाग लेने की भी कम से संभावना होती है। पूर्व अधिगम वातावरण में प्रवेश और विकास के समय बच्चों के सफल पारगमन को अनेक विधियों जैसे बच्चों की परिवर्तित परिवेश, जिसमें वे पारगमन कर रहे हैं, की दिनचर्या एवं मान्यताओं को समझने में सहायता करना, आदि के द्वारा सरल बनाया जा सकता है।

शुरुआती अधिगम वातावरण एवं स्कूल दोनों में पारगमन के दौरान अभिभावकों और शिक्षकों/संस्थानों

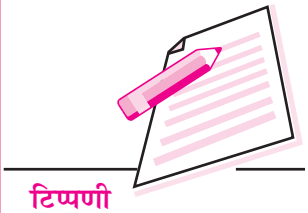

टिप्पणी

के मध्य साझेदारी, परिवर्तन की इस अवधि के प्रबंधन में माता-पिता के लिए सहायक हो सकती है।

सफल पारगमन हेतु निम्नलिखित कारक महत्वपूर्ण हैं–

- बच्चों की पूर्व एवं वर्तमान मान्यताओं का निर्माण;
- परिवारों में सहभागिता और पारगमन की तैयारी में बच्चों की सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करना;
- बच्चे जिस परिवेश में पारगमन कर रहे हैं, उसकी मान्यताओं और दिनचर्या को समझने में बच्चों की सहायता करना और इस प्रक्रिया में सहज महसूस कराना;
- विशेषरूप से स्कूल पारगमन चरण के दौरान बच्चों की स्थिति अथवा पहचान में बदलाव पर बातचीत करने में सहायता करना; और
- सफल पारगमन हेतु सहयोगात्मक रूप से कार्य करना।

## पाठगत प्रश्न 19.1

बताइए कि निम्नलिखित कथन सत्य है या असत्य–

1. अच्छी पारगमन मान्यताएँ बच्चों की संपूर्णता पर ध्यान केंद्रित करती हैं।
2. बच्चों की विशेषताओं में स्वभाव, बुद्धि-लब्धि, व्यक्तित्व, सामाजिक कौशल और संज्ञानात्मक योग्यता सम्मिलित हैं।
3. आर्थिक रूप से वंचित परिवारों के बच्चों के लिए स्कूल में पारगमन अपेक्षाकृत कम चुनौतीपूर्ण होता है।
4. माता-पिता पारगमन एवं तत्परता के लिए सहायता करने हेतु अच्छी तरह तैयार रहते हैं।

### 19.1.2 घर से प्रीस्कूल में पारगमन

छोटे बच्चों के लिए घर से प्री-स्कूल में पारगमन को सुगम बनाने का एक तरीका यह है कि उन्हें केंद्र एवं स्कूल दोनों के अंदर करवायी जाने वाली गतिविधियों से अवगत करा दिया जाए। स्कूल में बच्चों के सुगम नियोजन एवं अनुकूलन को सुनिश्चित करने हेतु पारगमन कार्यक्रमों को विभिन्न युक्तियों एवं प्रक्रियाओं के रूप में पहचाना जाता है, और उनमें वे गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं जो स्कूलों अथवा प्री-स्कूलों द्वारा घर और स्कूल अनुभवों के बीच के अंतर को समाप्त करने के लिए करवायी जाती हैं। सुगम पारगमन निम्नलिखित संबंधों पर निर्भर करता है–

#### परिवार-स्कूल संबंध

सकारात्मक स्कूल परिणामों को प्रोत्साहित करने हेतु परिवार एवं कर्मचारियों के संबंध बहुत

महत्वपूर्ण हैं। इन संबंधों को पोषित करने वाली गतिविधियाँ उपलब्ध कराना पारगमन योजना का एक अहम हिस्सा है। नियमित रूप से सूचनाओं के आदान-प्रदान से परिवार तथा स्कूल दोनों को लाभ होता है।

### बच्चा-स्कूल संबंध

छोटे बच्चों के लिए पारगमन को सुगम बनाने का एक तरीका यह है उन्हें केंद्र एवं स्कूल और दोनों में की जाने वाले गतिविधियों से परिचित कराया जाए।

### समवाय संबंध

प्री स्कूल अध्यापक अक्सर इस बात से चिंतित रहते हैं कि स्कूल में वर्ष की शुरुआत में बच्चे अपनी हम उम्र बच्चों के साथ मिलने-जुलने की क्षमता का प्रदर्शन नहीं करते हैं। जिस प्रकार वयस्क अपने परिचितों के साथ ही अधिक सहज महसूस करते हैं, उसी प्रकार बच्चे भी अनुभव करते हैं। बच्चों के लिए ऐसी परिस्थितियों की व्यवस्था करके जहाँ प्री-स्कूल के बच्चे एक दूसरे से बातचीत कर सके, उनकी संबंध बनाने में सहायता की जा सकती है, ये संबंध स्कूली वर्ष के प्रारंभ तक रहते हैं।

### सामुदायिक संबंध

समुदाय और स्कूल के बीच संबंध पारगमन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। जिन समुदायों में स्कूल और अन्य एजेन्सियों की मध्य संबंध होते हैं, वहाँ निरंतरता बढ़ जाती है।

## 19.1.3 घर से प्राथमिक स्कूल के पारगमन

पारगमन की गतिविधियों में सहयोग एवं समन्वय सुनिश्चित करते हैं कि बच्चे प्रीस्कूल अथवा घर से स्कूल के परिवेश में पारगमन करते समय पारगमन के संभव सर्वोत्तम अनुभव ले सकें।

ऐसा करने के लिए कुछ उपाय इस प्रकार हैं:-

- कभी-कभार केन्द्रों का भ्रमण करने के द्वारा बच्चे भावी केन्द्र शिक्षक से सीधे-सीधे अन्तर्क्रिया कर सकते हैं।
- स्कूलों में विशेष कार्यक्रमों के आयोजन के समय बच्चे अपने भावी स्कूल का भ्रमण कर सकते हैं।
- अभिभावक, केन्द्रों पर सामान्य रूप से की जाने वाली गतिविधियों का अभ्यास करा सकते हैं। इनमें एक पंक्ति में चलना, किंडरगार्डन गीत गाना अथवा किंडरगार्टन खेल खेलना आदि सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त, अभिभावक, अध्यापकों, सहायक कर्मचारियों, भवन आदि के चिह्नों के साथ स्क्रैपबुक बनाकर बच्चों को स्कूल में प्रवेश करने से पहले उन्हें स्कूल से परिचित कराने में सहायता कर सकते हैं।

बच्चों को प्राथमिक विद्यालय अथवा किसी भी स्तर की औपचारिक स्कूली शिक्षा में प्रवेश के

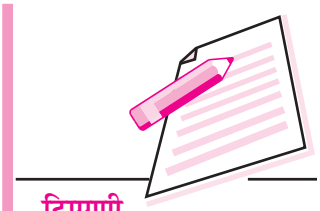

टिप्पणी

लिए तैयार करने का सबसे प्रभावी तरीका, एक भरोसेमंद, मजबूत समर्थन प्रणाली प्रदान करना है। एक मजबूत समर्थन प्रणाली में, सहायक समुदाय, दृढ़ परिवार, गुणवत्तापरक प्रारंभिक देखभाल एंव शिक्षा, तैयार स्कूल और तत्पर बच्चे सम्मिलित हैं।

सहायक समुदाय परिवारों की सहायता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वे परिवारों को सस्ती सेवा एवं सूचनाएं उपलब्ध कराकर बच्चों के स्कूलों एवं दीर्घकालिक सफलता में सहयोग देने हेतु साथ मिलकर कार्य करते हैं।

**मजबूत परिवार** यह समझते हैं कि वे बच्चे के जीवन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण लोग हैं। एक मजबूत परिवार बच्चों में प्रत्यक्ष, निरंतर और सकारात्मक संलग्न एवं रुचि का उत्तरदायित्व लेता है। परिवार के वयस्क बच्चे के प्रथम शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका को पहचानते हैं।

**गुणवत्तापरक प्रारंभिक देखभाल एवं शिक्षा** सभी बच्चों को स्वीकार करती है और एक उच्च गुणवत्तापरक औपचारिक अधिगम वातावरण में निर्बाध पारगमन में परिवारों की सहायता करती है।

**उद्यत स्कूल** बच्चों की क्षमता एवं व्यैक्तिक भिन्नता को पहचानते एवं प्रोत्साहित करते हुए सभी बच्चों का स्वागत करते हैं। उद्यत स्कूल सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति संवेदनशील होते हैं और समझते हैं कि बच्चों के समग्र विकास की दर भिन्न-भिन्न होती है।

**तत्पर बच्चे** विकासात्मक अपेक्षाओं के अनुरूप सामाजिक, व्यैक्तिक, शारीरिक और बौद्धिक रूप से उद्यत रहते हैं।

## 19.1.4 अभिभावकों एवं बच्चों हेतु पारगमन गतिविधियाँ

आप पारगमन के विषय में तथ्यपूर्ण ढंग से जितनी अधिक चर्चा करेंगे, बच्चे उतना ही सहज अनुभव करेंगे। अभिभावकों को अपने बच्चों को ईसीसीई केंद्रों हेतु तैयार करने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते हैं :-

- केंद्र का भ्रमण करें ताकि बच्चे अध्यापक से मिल सके और केंद्र को देख सकें। उनके लिए एक से अधिक प्रकार की कक्षा गतिविधियों के अवलोकन की व्यवस्था करने का प्रयास करें जैसे कि अपने स्थान पर बैठकर कार्य करने का समय और खाली समय की गतिविधियाँ।
- उन्हें शौचालय की स्थिति से अवगत कराएँ।
- पता करें कि दोपहर के भोजन का समय क्या होगा। यदि बच्चों को स्कूल में दोपहर का भोजन मिलने वाला है, तो उन्हें नये प्रकार के डब्बों को खोलना एवं उनको उपयोग करना सीखना होगा।
- किंडरगार्टन के विषय में पुस्तकें पढ़ें।
- बच्चों को केंद्र में क्या करना होगा इसका उन्हें सीधे तरीके से उत्तर दें। उन्हें बताएँ कि वे कहानियाँ सुनेंगे, गिनती करने वाली गतिविधियाँ करेंगे, समूह में समय बिताएंगे और बाहर खेलेंगे।

टिप्पणी

घर से प्री-स्कूल में पारगमन का समय अभिभावक एवं बच्चे दोनों के लिए तनाव-पूर्ण हो सकती है। हालांकि, यदि प्री-स्कूल के शिक्षक अभिभावकों के साथ सहयोग एवं बच्चों को केंद्र के कार्यों से परिचित कराने की सुविधा प्रदान करें, तो वह एक सुगम प्रक्रिया हो जायेगी। प्री-स्कूल शिक्षक, विभिन्न अधिगम शैलियों एवं अपने विद्यार्थियों के स्वभाव के ज्ञान के साथ, इस महत्वपूर्ण पारगमन में सभी की सहायता कर सकते हैं।

### 19.1.4.1 सुगम पारगमन सुनिश्चित करने हेतु सुझायी गई गतिविधियाँ

बहुत से स्कूल बच्चों को अभिविन्यास हेतु, चाहे वर्ष प्रारंभ होने से पहले, अथवा स्कूल के पहले दिन से कुछ दिन पहले कुछ अतिरिक्त गतिविधियों की सुविधा प्राप्त करना चाहते हैं। उदाहरणार्थ स्कूल इन गतिविधियों की व्यवस्था कर सकता है–

- बच्चे शुरूआत करने से पहले अपने कक्षा अध्यापक एवं अन्य कर्मचारियों (सहायक) से मिलें।
- माता-पिता स्कूली वर्ष समाप्त होने से पहले कक्षा-कक्ष में समय बिताएं।
- स्कूली वर्ष की समाप्ति अथवा छुट्टियों के दौरान बच्चों एवं अभिभावकों को खेल के मैदान में समय बिताना अथवा भ्रमण करना और स्कूल की स्थिति के बारे में जानना चाहिए।
- बच्चों एवं अभिभावकों को स्कूल मे शौचालय की स्थिति अथवा अन्य सुविधाएं कहाँ स्थित हैं और वे उनका किस प्रकार मिलेंगी, इसे अवगत कराना।
- **कहानी सुनाना :** कुछ बच्चे कहानियों को यह सीखने में उपयोगी पाते हैं कि क्या हो सकता है और विभिन्न परिस्थितियों में उनसे क्या अपेक्षाएं की जा सकती हैं माता-पिता खेल के मैदान, कक्षा, शिक्षक और सहायक कर्मचारियों की तस्वीरों का उपयोग करके स्कूल के बारे में एक या एक से अधिक कहानियां बना सकते हैं। माता-पिता शिक्षकों से स्कूल और कक्षा की दिनचर्या के बारे में पूछकर उसे अपनी कहानी में शामिल कर सकते हैं।
- **स्कूल के लिए आवश्यक कौशलों का अभ्यास :** स्कूल बच्चों की क्षमताओं के आधार पर इनसे कुछ कौशलों जैसे– अपने बस्ते को जमाना अथवा खाली करना, शौचालय जाना, अपने कपड़ों को बाँधना, अपने हाथ धोना, भोजन खोलना, खाने के डब्बे और पेय की बातलों को खोलना आदि की अपेक्षा कर सकता है। स्कूल शुरु होने से पहले बच्चों को इनका अभ्यास कराया जाना चाहिए।

### 19.1.5 पारगमन को सुगम बनाने के लाभ

सफल पारगमन के कुछ संकेतक इस प्रकार हैं:

- बच्चे स्कूल को पसंद करेंगे और स्कूल जाने को उत्सुक होंगे,
- बच्चों के शैक्षणिक कौशलों में निरंतर वृद्धि होगी,

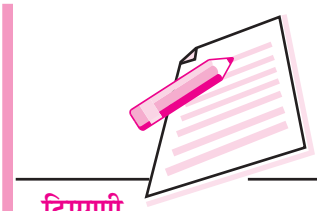

टिप्पणी

- माता-पिता, घर, स्कूल एवं समुदाय में अपने बच्चों की शिक्षा में सक्रिय रूप से संलग्न होंगे,
- कक्षा का वातावरण शिक्षक एवं बच्चें दोनों के लिए सकारात्मक अनुभूति को प्रोत्साहित करेगा,
- शिक्षक, कर्मचारीगण एवं परिवार सभी एक-दूसरे को महत्व देंगे,
- स्कूल अपने कार्यक्रमों में सामुदायिक विविधिता का उत्सव मनायेंगे; तथा
- कक्षा में विकासात्मक रूप से उपयुक्त अभ्यास दृष्टिगोचर होंगे।

## 19.2 तत्परता की समझ

स्कूल की तत्परता एक बहुआयामी अवधारणा है जिसमें शारीरिक/स्वास्थ्य, सामाजिक और संवेगात्मक क्षेत्रों के साथ-साथ भाषा की समझ, साक्षरता और संज्ञानात्मक क्षेत्र भी शामिल हैं। स्कूल की तत्परता के नये परिप्रेक्ष्य के अनुसार स्कूलों को बच्चों एवं उनके परिवारों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी तैयार रहने की आवश्यकता है।

स्कूल की तत्परता कई वर्षों तक प्रीस्कूल एवं प्राथमिक स्कूल दोनों स्तरों पर पूर्व बाल्यावस्था के शिक्षकों से संबंधित है। जिन बच्चों ने महत्वपूर्ण तत्परता कौशल विकसित किए बिना स्कूल शुरु किया है, इनकी भविष्य की शैक्षणिक, सामाजिक और व्यावसायिक सफलता 'जोखिम में' हैं।

पहले स्कूल की तत्परता को दो में से किसी एक प्रकार के आधार पर समझता जाता था, या तो इसको कालानुक्रमिक आयु के आधार पर जाना जाता था, और बच्चों को एक निर्धारित आयु पर स्कूल में दाखिल कर दिया जाता था, अथवा विशिष्ट कौशलों और दक्षताओं के संदर्भ में, जोकि दाखिल कर दिया जाता था, अथवा विशिष्ट कौशलों और दक्षताओं के संदर्भ में, जोकि स्थापित मानदंडों एवं मानकों के आधार पर भाषा और मूल्यांकित किया जा सके, समझा जाता था।

वर्तमान शोध, स्कूल की तत्परता पर विचार करते हुए बच्चों के विकास के सभी पहलुओं को ध्यान में रखने के महत्व पर प्रकाश डालती है। बच्चों के स्कूल में प्रवेश से पूर्व, उनके विकास के अनुकूलन हेतु, जहाँ आवश्यक हो वहाँ बच्चों को सहायता, अनुभव एवं प्रभावी प्राथमिक हस्तक्षेप रणनीतियाँ प्रदान करना आवश्यक है।

सामान्य तौर पर, जो बच्चे स्कूल के लिए तैयार होते हैं, वे वयस्कों एवं अन्य बच्चों के साथ सहयोग करते हैं। वे अधिकांश परिस्थितियों में आत्म-नियंत्रण का प्रदर्शन करते हैं, अपने घर एवं प्रीस्कूल के नियमों का पालन करते हैं, और अपने खाली समय का उपयोग स्वीकार्य तरीके से कर सकते हैं। वे अपने खिलौने एवं अन्य समान खुशी से साझा करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर अपने दोस्तों के साथ समझौता कर सकते हैं। स्कूल की तत्परता इस बात का पैमाना है कि बच्चे स्कूल में सफल होने के लिए संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं भावात्मक रूप से कितने

टिप्पणी

तैयार हैं। जो बच्चे स्कूल शुरू करने के लिए तैयार नहीं होते हैं, वे अक्सर पढ़ने में पीछे रह जाते हैं। तीसरी कक्षा की समाप्ति तक भी वे अच्छी प्रकार से पढ़ने में असमर्थ रहते हैं। ऐसे बच्चों तक पहुँचने के लिए हमें माता-पिता को भागीदार बनाने, प्री-स्कूल कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करने और गुणवत्तापरक बाल्य देखभाल केन्द्रों में निवेश करने की आवश्यकता है।

स्कूल की तत्परता को इस प्रकार पहचाना जाता है:-

**तत्परता का प्रदर्शन करना :** बच्चे आधारभूत कौशलों एवं व्यवहारों का प्रदर्शन करते हैं जो उन्हें किंडरगार्टन मानकों पर आधारित पाठ्यक्रम के लिए तैयार करते हैं।

**तत्परता की ओर बढ़ना :** बच्चे कुछ मूलभूत कौशलों एवं व्यवहारों का प्रदर्शन करते हैं जो कि उन्हें पाठ्यचर्या आधारित किंडरगार्टन मानकों हेतु तैयार करते हैं।

**उभरती तत्परता :** बच्चे न्यूनतम मूलभूत कौशलों और व्यवहारों का प्रदर्शन करते हैं, जो उन्हें किंडरगार्टन मानकों पर आधारित पाठ्यक्रम हेतु तैयार करते हैं।

जिन बच्चों के कौशलों और व्यवहारों की तत्परता की पहचान विकासशील अथवा उभरती हुई तत्परता के रूप में की जाती है, उन्हें औपचारिक स्कूल में सफलता हेतु अनुदेशनात्मक सहयोग की आवश्यकता होती है। स्कूली तत्परता का आशय है स्कूल में ज्ञान, कौशल, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के साथ आना, जोकि सफलतापूर्वक प्रतिभागिता के लिए आवश्यक होती है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित सम्मिलित हैं:

**सीखने के प्रति दृष्टिकोण :** बच्चे किस हद तक सीखने के कार्यों के प्रति जिज्ञासा, उत्साह एवं दृढ़ता दिखाते हैं?

**संज्ञान एवं सामान्य ज्ञान :** क्या बच्चों को उनके आस-पास की दुनिया वह मौलिक ज्ञान है? क्या वे आकृतियाँ, संख्याएँ, अपना नाम इत्यादि जानते हैं?

**भाषा विकास :** बच्चे अर्थ और समझ को व्यक्त करने हेतु किस हद तक शाब्दिक एवं अशाब्दिक कौशलों का उपयोग करते हैं?

**शारीरिक स्वस्थता :** क्या बच्चों की वृद्धि और विकास ठीक से हो रहा है? क्या वे स्वस्थ हैं?

**सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास :** क्या बच्चे दूसरों के साथ अच्छी तरह से बातचीत करते हैं और अपनी भावनाओं को सही तरीके से अभिव्यक्त कर पाते हैं?

### 19.2.1 तत्परता का महत्व एवं घटक

स्कूल तत्परता उस ज्ञान, स्वतंत्रता, संचार एवं सामाजिक कौशलों को कहते हैं जिन्हें बच्चों को स्कूल में बेहतर करने की आवश्यकता होती है। स्कूल तत्परता कौशल महत्वपूर्ण क्यों हैं? स्कूल तत्परता कौशलों का विकास, विशिष्ट क्षेत्रों में बच्चों की सामाजिक अंतर्क्रिया, खेल, भाषा, संवेगात्मक विकास, शारीरिक कौशल, साक्षरता और अच्छे गतिक कौशलों के विस्तार और विकास हेतु स्कूल के शिक्षकों को प्रोत्साहित करती है। स्कूल तत्परता का आशय है कि बच्चे

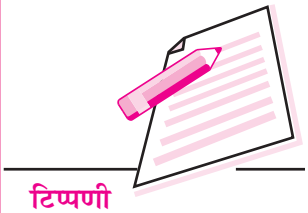

टिप्पणी

प्रारंभिक अधिगम अनुभवों से जुड़ने एवं लाभ उठाने हेतु स्कूल में प्रवेश के लिए तैयार हैं जो उनकी सफलता को प्रोत्साहित करेगा।

वे अनुभव जो बच्चों को स्कूल में प्रवेश एवं सफल होने में सहायक होते हैं उनको प्रदान करना कभी भी बहुत जल्दी शुरू नहीं किया जाता। बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करने के लिए उन्हें पढ़ाने, उनके साथ बात करने एवं उनके साथ खेलने की आवश्यकता होती है।

स्कूल के लिए तत्पर बच्चों द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली कुछ अपेक्षित विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- शौच आदि में आत्म-निर्भर
- स्वयं कपड़े पहनने में समर्थ
- व्यवहार के अपेक्षित स्तरों को समझना
- आत्म-विश्वास एवं आत्म-सम्मान
- मोड ले सकते हैं एवं साझा कर सकते हैं
- छोटी अवधि के लिए स्थिर बैठ सकते हैं
- माता-पिता / देखभाल करने वालों से अलग हो सकते हैं।

## पाठगत प्रश्न 19.2

खाली स्थान भरिए–

1. कई स्कूल बच्चें को अतिरिक्त ..... गतिविधियाँ प्रदान करने के लिए तैयार रहते हैं।
2. सुरक्षा नियोजन सुनिश्चित करने हेतु पारगमन कार्यक्रमों की पहचान युक्तियों एवं ..... के रूप में की जाती है।
3. ..... शैक्षणिक ज्ञान, स्वतंत्रता, संचार और सामाजिक कौशलों जिनमें बच्चों को स्कूल में अच्छा करने की आवश्यकता होती है, को संदर्भित करती है।
4. बच्चों का छोटी अवधि के लिए स्थिर बैठ सकना, तत्परता की अपेक्षित ..... में से एक है।
5. स्कूल तत्परता द्वारा जाना जाता है कि स्कूलों को बच्चों एवं उनके परिवारों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु ..... की आवश्यकता है।

### 19.2.2 प्रीस्कूल हेतु तत्परता के घटक

शिक्षा का व्यापक उद्देश्य बच्चों के समग्र विकास में सहायता करना है जिसका अर्थ है कि बच्चे विकास के सभी आयामों संज्ञानात्मक, सामाजिक-संवेगात्मक, शारीरिक, भाषायी और साक्षरता, में अपनी क्षमता को प्राप्त करें। बच्चों की समग्र वृद्धि का तात्पर्य हैं कि उन्हें उनके सर्वांगीण

टिप्पणी

विकास से सहायता करने हेतु विभिन्न प्रकार के अवसर प्रदान किया जाता। तत्परता के घटकों में निम्नलिखित शामिल हैं :

### 1. शैक्षणिक तत्परता

प्रीस्कूल में प्रवेश से पूर्व बच्चों को स्वयं का, अपने परिवार का एवं अपने आसपास की दुनिया का मौलिक ज्ञान होना चाहिए। देखभाल करने वाले, वयस्कों के साथ खेलने और अन्तर्क्रिया के माध्यम से बच्चे अनेक कौशलों के साथ स्कूल आ सकते हैं, जिन्हें शिक्षकों द्वारा और बेहतर किया जा सकता है।

**अभिभावकों के लिए अपने बच्चों को स्कूल के लिए शैक्षिक ज्ञान से तैयार करने हेतु गतिविधियाँः-**

- प्रतिदिन अपने बच्चे को पढ़कर सुनायें और जो आपने पढ़ा उसके विषय में बातें करें।
- पुस्तकालय का भ्रमण करें। पुस्तकों को देखें और कहानी के समय में भाग लें।
- लयबद्ध गीत गाएं और अंगुलियों वाले खेल खेलें।
- बच्चों को मुद्रित नाम पहचानने में मदद करने हेतु उनके कपड़ों एवं खिलौनों पर उनका नाम अंकित करें।
- अपने बच्चे को उसका नाम लिखने के लिए प्रोत्साहित करें।
- अपने बच्चे को वस्तुओं की ओर इशारा करके और उनके नामकरण करके जैसे कि 'हरे पेड', 'लाल सेब', या 'नीले कोट' बुनियादी रंग सीखने में सहायता करें।
- अपने बच्चे को पहेली एवं ऐसे खेले दें, जिनमें गिनने और समस्या समाधान की आवश्यकता पड़ती हो। अपने बच्चे को कलम चलाने, चित्र बनाने, लिखने, काटने और चिपकाने दें।
- अपने बच्चे के साथ वर्णमाला गीत गाएं और उसे अक्षर चुंबक अथवा अन्य खिलौने प्रदान करें जो उसे वर्णमाला के अक्षरों को पहचानने में मदद करेंगे।
- अपने बच्चे को चिड़ियाघर, पार्क, किराने की दुकान और डाकघर में ले जाएं। उनसे अपने दिन के दृश्यों एवं आवाजों के विषय में बात करें।
- अपने बच्चे को गाने, नृत्य, चढ़ना, कूदना, दौड़ना, तिपहिया, साइकिल अथवा साइकिल चलाने का समय दें।
- ऐसा बाल्य देखभाल केंद्र चुने जो पूर्ण नियोजित, आनंददायक और रुचिकर गतिविधियों के साथ अधिगम को प्रोत्साहन देता है।

### 2. सामाजिक तत्परता

सामाजिक तत्परता उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि शैक्षिक तत्परता। अन्य बच्चों के साथ मेल-जोल बनाने में सक्षम होना, निर्देशों का पालन करना, अपनी बारी लेना और

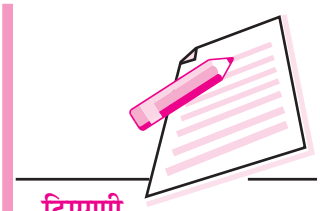

टिप्पणी

माता-पिता को अलविदा कहना आदि ऐसे कौशल हैं जिन्हें शिक्षक आने वाले बच्चों में देखने की अपेक्षा रखते हैं।

**अभिभावकों के लिए अपने बच्चे को सामाजिक रूप से स्कूल हेतु तैयार करने की गतिविधियाँ:**

- नियम निर्धारित करना एवं उनको तोड़ने के परिणाम बताना।
- भोजन एवं सोने की नियमित दिनचर्या रखना।
- अपने बच्चे को अन्य बच्चों के साथ खेलने एवं बात करने हेतु प्रोत्साहित करें।
- अपने बच्चों को अपनी बारी लेने और अन्य बच्चों से साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- बच्चे को उनके द्वारा शुरू किये गये कठिन अथवा निराशाजनक कार्य को एक ही बार में पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- बच्चे को दूसरों की भावनाओं पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- अपने बच्चों को सकारात्मक तरीके से अपनी भावनाएं अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- मारना, काटना, चीखना एवं अन्य नकारात्मक व्यवहारों को हतोत्साहित करें।
- अपने बच्चे को दिन में कई बार चूमें एवं गले लगाएं।

### 3. आत्मनिर्भरता

जब बच्चे मूलभूत कार्यों, जैसे अपने कोट की जिप बंद करना या अपने जूते के फीते बांधना आदि को स्वयं की मदद से पूरा करते हैं तो उन्हें गर्व का अनुभव होता है। आत्म-निर्भरता, आत्म-विश्वास एवं आत्म-सम्मान को निर्मित करती हैं। स्कूल में कई चीजें बच्चे को स्वयं करने की अपेक्षा की जायेगी।

**अभिभावकों हेतु अपने बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने और स्कूल के लिए तैयार करने हेतु गतिविधियाँ:**

- ऐसे कपड़े और जूते खरीदना जिन्हें बच्चे अपने आप आसानी से कस लें, जिप बंद कर सकें और बाँध सकें।
- अपने बच्चे को उसके कपड़े और जूते स्वयं पहनने दें।
- बच्चों को अपनी बारी लेने और अन्य बच्चों के साथ साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- अपने बच्चे को साधारण कार्य करने दें जैसे खाने के समय मेज व्यवस्थित करना अथवा खेलने के पश्चात् खिलौनों को सफाई से रखना।
- शौच क्रिया एवं हाथ धोने में आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करें।
- अपने बच्चे को गतिविधियों जैसे कि पहेलियों को पूरा करना आदि को स्वतंत्र रूप से करने के अवसर दें।

### 4. संप्रेषण कौशल

प्री–स्कूली वर्षों में पढ़ने और लिखने हेतु सुनना एवं बोलना पहले चरण हैं। अपने अभिभावकों, अध्यापकों और मित्रों में संप्रेषण के माध्यम से वे लोगों, स्थानों और चीजों के विषय में जानते हैं जिनके बारे में वे बाद में पढ़ेंगे और लिखेंगे।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चे स्कूल में अपने विचारों और भावनाओं को सही प्रकार संम्प्रेषित कर सकें, अभिभावकों को चाहिए कि वे–

- अपने बच्चों के साथ नियमित रूप से बात करें।
- अपने बच्चे को दूसरों की बात सुनने और जब कोई बात कर लें तो उसका जवाब देने के लिए प्रोत्साहित करें।
- अपने बच्चों को नये शब्दों को सीखने एवं उनका उपयोग करने में सहायता करें।
- बच्चे द्वारा जिस भाषा का उपयोग चाहते हैं उसी भाषा का आदर्श प्रस्तुत करें।
- अपने बच्चों के लिए नोट्स लिखें।

### 5. स्वास्थ्य एवं शारीरिक सुरक्षा

अभिभावकों हेतु यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनके बच्चे शारीरिक रूप से स्कूल जाने के लिए तैयार हैं, गतिविधियाँ–

- संतुलित आहार खाना।
- पर्याप्त आराम करना।
- नियमित रूप से चिकित्सा एवं दंत चिकित्सा देखभाल प्राप्त करना।
- सभी आवश्यक टीके लगवाएं हों।
- दौडना, कूदना, चढ़ना और अन्य गतिविधियाँ जो मांसपेशियों के विकास में सहायक होती है और व्यायाम प्रदान करती है, इनको कर सकना।
- पेंसिल, क्रेयॉन, कैंची, पेंट्स आदि का उपयोग करते हैं और अन्य गतिविधियाँ करते हैं जो छोटी मांसपेशियों के विकास में सहायक होती हैं।

## पाठगत प्रश्न 19.3

निम्नलिखित को एक वाक्य में समझाइए–

(a) शैक्षणिक तत्परता

(b) सामाजिक तत्परता

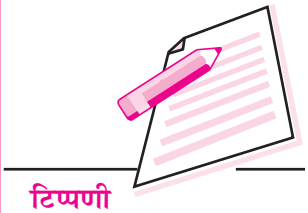

टिप्पणी

(c) आत्म-निर्भरता

(d) स्वास्थ्य एवं शारीरिक सुरक्षा

(e) संप्रेषण कौशल

## 19.2.3 स्कूल के लिए तत्परता के घटक

प्री-स्कूल डे केयर के विस्तृत रूप जैसा होता है। इसका कारण यह है कि बच्चों को औपचारिक रूप से पढ़ने-लिखने के लिए तैयार करने हेतु यहाँ की शिक्षण शैली कम संरचित होती हैं, जबकि स्कूल में अधिक जटिल गतिविधियाँ होती हैं। इसके मुख्य घटक:

### बच्चों की संवेगात्मक एवं सामाजिक तैयारी

- साधारण नियमों एवं दिनचर्या का पालन।
- अपनी आवश्यकताओं एवं इच्छाओं को व्यक्त कर सकना।
- सीखने के लिए जिज्ञासु एवं अभिप्रेरित।
- नयी चीजों का पता लगाने एवं प्रयास करने के लिए सीखना।
- अन्य बच्चों के साथ रहने और साथ खेलने/साझा करने के अवसर होना।
- बिना परेशान हुए माता-पिता/परिवार से दूर रह पाना।
- अकेले ठीक प्रकार से काम कर सकना।
- ध्यान केंद्रित करने एवं सुनने की क्षमता।

### भाषा, गणित एवं सामान्य ज्ञान

- पांच से छह शब्दों के वाक्यों का प्रयोग।
- सरल गीत गाना।
- सरल तुकांत कविता कहना और पहचानना।
- नाम एवं पता लिखना सीखना।
- गिनना और गिनती वाले खेल सीखना।
- आकृतियों एवं रंगों की पहचान एवं उनके नाम सीखना।
- संगीत सुनने, बनाने और नृत्य के अवसर होना।
- प्रिंट एवं चित्रों के बीच अंतर को जानना।
- उनके लिए पढ़ी गयी कहानियों को सुनना।
- समानता एवं भिन्नता को पहचानने के अवसर होना।

- प्रश्न पूछने हेतु प्रोत्साहित करना।
- समय की सामान्य अवधारणा (रात और दिन, आज, कल, आने वाला कल) को समझना।
- वस्तुओं को क्रमबद्ध एवं वर्गीकृत करना।

शिक्षक इस बात से सहमत हैं कि बच्चों की प्री-स्कूल और प्रथम कक्षा के लिए सामाजिक और संवेगात्मक तत्परता हेतु प्रमुख संकेतक इस प्रकार हैं:

(i) नई जिम्मेदारियों और अधिक आत्मनिर्भरता को स्वीकार करने की तत्परता।

(ii) सीखने के लिए अति उत्साह।

(iii) नये मित्र बनाने और दूसरों का सम्मान करने की योग्यता।

स्कूल तत्परता कार्यक्रम का ध्यान यह सुनिश्चित करने पर होता है कि बच्चे स्कूल में सफल होने के लिए भावनात्मक एवं सामाजिक रूप से परिपक्व हैं।

## 19.3 अभिभावकों, स्कूलों, शिक्षकों एवं अन्य देखभालकर्ताओं की भूमिका

जब छोटे बच्चे पहली बार स्कूल में प्रवेश करते समय वे स्कूल की तुलना अपने घर से करते हैं। इसलिए स्कूल का वातावरण तनावमुक्त एवं उत्साही होना चाहिए ताकि वे सुरक्षित महसूस करें। शिक्षकों को बच्चों के साथ तालमेल स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए और उन्हें खुश रखना चाहिए। यह उन्हें संवेगात्मक रूप से सुरक्षित बनाता है। छोटे बच्चों को जब तक उनके माता-पिता, परिवार और समुदाय से उनक संपूर्ण विकास को प्रोत्साहित करने वाला पर्यावरण और अनुभव जो स्कूल में विकास को आगे बढ़ाने में सहयोग करें, प्राप्त नहीं होता तब तक वे स्कूल में प्रवेश हेतु तैयार नहीं हो पायेंगे। बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करने में निम्नलिखित सम्मिलित हैं–

- तैयार बच्चे
- तैयार माता-पिता, परिवार और समुदाय
- तैयार स्कूल
- तैयार शिक्षक एवं अन्य कार्यबल

### 19.3.1 तैयार बच्चे

जब बच्चे प्रीस्कूल में प्रवेश करते हैं, तो उनकी विभिन्न गतिविधियों में संलग्नता के दौरान, शिक्षकों को उनके अवलोकन द्वारा उनकी तत्परता का आकलन करने की आवश्यकता होती है। शिक्षक को यह अवलोकन करना चाहिए कि क्या बच्चे तत्परता का प्रदर्शन कर रहे हैं, तत्परता की ओर बढ़ रहे हैं अथवा उभरती हुई तत्परता दिखा रहे हैं, और तदनुसार उनका सहयोग करने

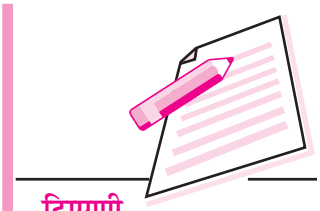

टिप्पणी

के लिए गतिविधियों की योजना बनानी चाहिए। जैसाकि इस पाठ में पहले बताया गया है कि विकासशील और उभरते हुए तत्परता कौशल वाले बच्चों को सफल होने के लिए अधिक अनुदेशनात्मक सहयोग की आवश्यकता होती है।

इस तरह के प्रयास से शिक्षकों को बच्चों की आवश्कतानुसार कार्यक्रमों और अपनी शिक्षण रणनीतियों को समायोजित करने में सहायता मिलेगी। शिक्षकों को यह ध्यान रखना चाहिए कि यह एक बार की गतिविधि नहीं है बल्कि एक सतत प्रक्रिया है। इसे शिक्षक द्वारा दैनिक गतिविधियों का एक अभिन्न अंग बनाया जा सकता है। शिक्षक को विकास संबंधी उपयुक्त गतिविधियों की योजना बनानी चाहिए, बच्चों को अवसर एवं सामग्री प्रदान करनी चाहिए और उन्हें अंवेषण, खोज, खेलने की अनुमति एवं उचित चुनौतियां प्रदान करनी चाहिए। यह प्रक्रिया बच्चों को पूर्व प्राथमिक अथवा प्राथमिक स्तर के लिए तैयार करने हेतु सहायक होगी।

### 19.3.2 तैयार माता-पिता/परिवार और समुदाय: उनकी भूमिका

बच्चों को एक अनुकूल एवं प्रेरणात्मक वातावरण प्रदान करने में वयस्कों की अत्यधिक भूमिका होती है। माता एवं छोटे बच्चों के आस-पास रहने वाले वयस्क उनके प्रथम शिक्षक होते हैं। बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि वे उन्हें स्थायी एवं सहयोगात्मक संबंध और सीखने की जिज्ञासा एवं उत्सुकता उत्पन्न करने में सहायक, सुरक्षित एवं आनंदमय वातावरण प्रदान कर सकते हैं।

परिवारों की भाँति ही, समुदाय भी बच्चों को तैयार करने में अहम् भूमिका निभाते हैं। स्थानीय सामुदायिक समूहों, व्यवसाय एवं कोर्पोरेट घरानों और सरकारों को बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा सुविधाएं विकसित करने हेतु सामूहिक रूप से कार्य करना चाहिए। वे कई प्रकार से योगदान दे सकते हैं जैसे कि गुणवत्तापरक डे केयर एवं पूर्व बाल्यावस्था शिक्षा (ECE) की आवश्यकता के विषय में अभिभावकों को उन्मुख एवं शिक्षित करना, और प्रीस्कूल केंद्रों अथवा आँगनवाड़ियों के कार्यकर्ताओं को शैक्षिक एवं तकनीक सहयोग प्रदान करना।

छोटे बच्चों के अभिभावकों को ईसीई और प्रारंभिक मस्तिष्क विकास के महत्व को विषय में सचेत होने की आवश्यकता है। उन्हें घर पर प्रेमपूर्ण एवं पोषक वातावरण प्रदान करना चाहिए। वे छोटे बच्चों के लिए उनकी आयु के अनुरूप खिलौने एवं खेल सामग्री खरीद सकते हैं। माता-पिता को घर से ईसीई केंद्र तक सुगम पारगमन सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहिए जहाँ बच्चे, पहली बार घर से अलग होकर एक नए वातावरण से जाएंगे। माता-पिता को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे शौचालय-प्रशिक्षित हैं और ईसीसीई केंद्र में देखभालकर्ताओं को अपनी आवश्यकताओं को व्यक्त करने में सक्षम हैं। माता-पिता एवं समुदायों की भूमिका महत्वपूर्ण है। उन्हें विभिन्न गतिविधियों के बारे में सीखना चाहिए जिन्हें वे बच्चों को तैयार करने हेतु घर पर कर सकते हैं एवं घर से केंद्र पर बच्चों का सुगम पारगमन सुनिश्चित कर सकते हैं। स्कूल अभिभावकों की शिक्षा एवं जागरूकता हेतु कार्यक्रम व्यवस्थित कर सकते हैं। जिससे उन्हें यह जानने में सहायता मिलेगी कि वे छोटे बच्चों के घर से स्कूल में सुगम पारगमन हेतु किस प्रकार सहायता प्रदान कर सकते हैं।

टिप्पणी

## 19.3.3 तैयार स्कूल : उनकी भूमिका

घर, बाल्य देखभाल केंद्र अथवा क्रेच से पूर्व-प्राथमिक परिवेश में पारगमन के लिए माता-पिता और समुदाय को शामिल करने की आवश्यकता है। बच्चों को पूर्व-प्राथमिक स्कूल के लिए तैयार करने हेतु पूर्व-प्राथमिक केंद्र/स्कूल, अभिभावक शिक्षा कार्यशाला आयोजित कर सकते हैं और माता-पिता, क्रेच कार्यकर्ताओं एवं अन्य सामुदायिक संस्थानों और सदस्यों के साथ मिलकर काम कर सकते हैं। इस प्रकार की योजनाबद्ध अंतर्क्रिया शिक्षक को बच्चे के कौशल एवं प्रतिभा के साथ-साथ उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के बारे में प्रासंगिक जानकारी एकत्र करने में सहायता मिलेगी।

इसी प्रकार जब बच्चे पूर्व-प्राथमिक से प्रथम कक्षा में जाते हैं, प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों एवं अभिभावकों को अपने बच्चों की प्रगति एवं उपलब्धि के स्तर को जानने के लिए पूर्व-प्राथमिक शिक्षक से संपर्क करने की आवश्यकता होती है। यह पूर्व प्राथमिक से प्राथमिक स्कूल एक नये एवं अधिक औपचारिक शैक्षिक वातावरण में पारगमन को सुगम बनाने में सहायक होगा। पूर्व-प्राथमिक स्कूल में बच्चों के प्रोर्टफोलियो को प्रथम कक्षा के शिक्षक साथ साझा करने के साथ उनको दे दिया जाए ताकि उन्हें बच्चे के स्कूल में प्रवेश के समय बच्चे को समझने में सहायता मिल सके।

पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्कूलों को संरचनात्मक ढांचे, संतुलित एवं विकासात्मक रूप से उपयुक्त कार्यक्रम एवं दैनिक दिनचर्या, शिक्षण-अधिगम सामग्री एवं शिक्षण रणनीतियाँ, सहयोगात्मक अधिगम पर्यावरण और उपयुक्त छात्र शिक्षक अनुपात के रूप में बच्चों का स्वागत करने हेतु तैयार रहना चाहिए।

एक तत्पर स्कूल का पाठ्यक्रम बच्चों के पूर्व अनुभवों, कौशलों और सार्थक अनुभवों के आधार पर तैयार किया जाता है। दूसरा स्कूलों को बच्चों के बीच भाषा, संस्कृति और अधिगम स्तर के रूप में पायी जाने वाली व्यैक्तिक भिन्नता का सम्मान करना चाहिए। यह तभी संभव है, जब स्कूल घर एवं समुदाय के घनिष्ट सहयोग से काम करे। ईसीई केंद्रों में बाल-सुलभ शौचालय सुविधाएँ, लॉकर्स/अलमारियाँ और अन्य भण्डारण स्थानों पर बच्चों की पहुँच आसान होनी चाहिए। इस प्रकार ईसीई केंद्र एवं प्राथमिक स्कूल की प्रारंभिक कक्षाएं ऐसी होनी चाहिए जिनमें उन्हें चलने, ले जाने और पर्यवेक्षण करने की काम से कम आवश्यकता पड़े। ईसीई केंद्र यदि प्राथमिक स्कूल के भीतर अथवा उसके समीप स्थित हों तो अच्छा होगा। कक्षाकक्ष का वातावरण आमंत्रित करने वाला एवं प्रिंट समृद्ध होना चाहिए जिसे बच्चों की रुचि, पर्यवेक्षण और अधिगम कौशलों को वृद्धि करने हेतु समय-समय पर बदला जाना चाहिए। सभी चीजें बच्चों की आँखों के स्तर पर प्रदर्शित की जानी चाहिए। कक्षाकक्ष में पर्याप्त सामग्री एवं उपकरण जैसे कि क्रेयॉन, क्ले, विभिन्न आकारों के ब्लॉक, पैंसिल, चित्रित पुस्तकें, कहानी की पुस्तकें, खेल, गुडिया, खिलौने, पहेलियां आदि होने चाहिए और सभी बच्चों के लिए यह सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए।

## 19.3.4 तैयार शिक्षक और अन्य कर्मचारी : उनकी भूमिकाएं

सभी शिक्षकों और देखभालकर्ताओं को गुणवत्तापरक कार्यक्रम एवं बच्चों की विकासात्मक

टिप्पणी

विशेषताओं की अच्छी समझ होनी चाहिए। विकासात्मक विशेषताओं का ज्ञान बच्चों की आवश्यकताओं, रुचियों एवं क्षमताओं पर आधारित कार्यक्रम बनाने एवं उन्हें संशोधित करने में उनकी सहायता करता है। शिक्षकों एवं बच्चों के आस-पास रहने वाले अन्य वयस्कों को अच्छे अवलोकनकर्ता होना चाहिए जिससे कि वे अपने प्रत्येक बच्चे को समझ सकें और यदि आवश्यक हो तो दैनिक कार्यक्रम में परिवर्तन कर सकें। शिक्षकों एवं अन्य सहायक कर्मचारियों को सर्वप्रथम बच्चों को संवेगात्मक सुरक्षा प्रदान करनी चाहिए और कक्षा का वातावरण सहयोगात्मक बनाना चाहिए। दैनिक कार्यक्रम लचीला एवं अधिगम पद्धति खेल आधारित होनी चाहिए। एक सहयोगात्मक वातावरण निर्मित करने में सहायता करने हेतु उन्हें प्रत्येक बच्चे के अवलोकन को साझा करना चाहिए।

ईसीई केंद्रों एवं प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों को छोटे बच्चों को संभालने के लिए उपयुक्त प्रशिक्षण मिलना चाहिए। पूर्व-प्राथमिक शिक्षकों को बच्चों की व्यैक्तिक मित्रता से निपटने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए और सभी स्तरों पर सुगम पारगमन सुनिश्चित करना चाहिए। पूर्व प्राथमिक एवं प्रारंभिक प्राथमिक शिक्षकों के बीच औपचारिक अथवा अनौपचारिक रूप से नियमित बातचीत पारगमन को सरल कर देती है। ईसीसीई केंद्रों के सभी शिक्षकों एवं कर्मचारियों को सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाओं और पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के माध्यम से अपने कौशलों एवं दक्षताओं के उन्नयन के अवसर प्रदान किये जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त वे भिन्न-भिन्न पृष्ठभूमियों से आने वाले बच्चों की विशिष्ट शैक्षिक एवं अन्य आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु आवश्यक सहायता सेवाओं जैसे- काऊंसलर्स विशेष शिक्षक आदि की सहायता भी ले सकते हैं।

## 19.4 स्कूल तत्परता के विभिन्न घटकों हेतु गतिविधियों की योजना एवं रूपरेखा

किसी भी गतिविधि की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह कितनी अच्छी तरह से तैयार एवं कार्यान्वित की गयी है। पढ़ने और लिखने के लिए भी तैयार की आवश्यकता होती है, विशेषतया जब यह छोटे बच्चों को सिखाना हो। बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक दोनों तरह से तैयार होने के बाद ही उन्हें कौशलों से परिचित कराए। बच्चों की तत्परता से पूर्व किसी भी चीज का परिचय न केवल अधिगम प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करता हैं, बल्कि स्कूल के प्रति अरुचि और तत्पश्चात् स्कूल छोड़ने का कारण भी होता है। शिक्षक को सभी क्षेत्रों में विकास हेतु सरल एवं रुचिकर गतिविधियों की योजना बनानी चाहिए। विकास के विभिन्न क्षेत्रों में उदाहरण स्वरूप कुछ गतिविधियाँ इस प्रकार हैं:

### (i) भाषा एवं संज्ञानात्मक विकास

लिखना और पढ़ना सीखने से पूर्व बच्चों को स्वयं को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने एवं दूसरों को समझने में सक्षम होना चाहिए। इसलिए शिक्षक को बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखाने से पूर्व उन्हें ऐसे अनुभव प्रदान करने चाहिए जो उनके भाषा विकास को प्रोत्साहित करें। कुछ निश्चित गतिविधियाँ जो इसमें सहायक हो सकती हैं, इस प्रकार हैं:

1. बातचीत (स्वतंत्र एवं निर्देशित)
2. कहानी कथन एवं तुकबंदी
3. अभिनय (संरचित एवं असंरचित)
4. पहेलियाँ हल करना
5. विश्वसनीय खेल (make believe play) / अभिनय / नाटक
6. भ्रमण एवं सैर

## पढ़ना, लिखना एवं संख्या तत्परता

*पढ़ने की तत्परता*

पढ़ने की तत्परता हेतु बच्चों को गतिविधियाँ एवं अनुभव प्रदान किये जाने चाहिए ताकि वे बाद में पढ़ने का कौशल सीखने के लिए तत्पर हो सकें। एक जैसी वस्तुओं का मिलान करना, चित्रित वार्तालाप, बेमेल अथवा एक जैसी वस्तुओं को अंकित करना आदि इस प्रकार की कुछ गतिविधियाँ हैं। बच्चों को विभिन्न ध्वनियों को सुनने एवं उनके बीच अंतर को पहचानने के अवसरों के साथ-साथ शब्दो की शुरुआती ध्वनि एवं अंतिम ध्वनि को पहचानने के अवसर भी दिये जाने चाहिए। कुछ गतिविधियाँ इस प्रकार हैं:

(क) दृश्य भेद (आकृति/आकार/रंग आदि में अंतर पहचानना)

(ख) ध्वनि भेद (ध्वनियों में अंतर पहचानना)

(ग) अवलोकन कौशल एवं स्मृति का विकास (देखी गयी वस्तुओं का स्मरण)

(घ) वस्तुओं का वर्गीकरण (आकार, विशेषताओं आदि के अनुसार)

(ङ) अनुक्रमिक सोच

(च) शब्दावली का विकास

*लिखने की तत्परता*

लिखने की तत्परता हेतु, शिक्षक को ऐसी गतिविधियाँ प्रदान करनी चाहिए जो बच्चों में आँखों और हाथों के समन्वय को विकसित करने में सहायक हों। इस हेतु कुछ गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं:-

(क) क्ले मॉडलिंग

(ख) दिए गये स्थान/तस्वीर में रंग भरना

(ग) स्लेट/फर्श पर चित्र बनाना

(घ) खाका (Tracing)

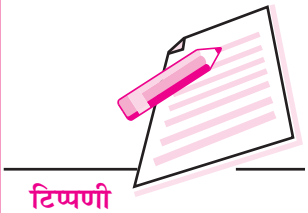

टिप्पणी

(ज) आकृतियों की नकल करना

(च) बिंदुओं को मिलना

(छ) आड़ी-तिरछी/सीधी रेखाएं बनाना

*संख्या तत्परता*

संख्या की आवधारणा सिखाने से पहले, यह आवश्यक है कि बच्चों को संख्याओं से संबंधित विशिष्ट गतिविधियाँ/अनुभव प्रदान करें जैसे कि:-

(क) वर्गीकरण/छाँटना

(ख) अनुक्रमिक सोच

(ग) समस्या समाधान

(घ) संख्या पूर्व अवधारणा जैसे कि– बड़ा-छोटा, लम्बा-छोटा, ज्यादा-कम, मोटा-पतला, दूर-पास, चौड़ा-संकरा, नीचा-ऊँचा, पहले-बाद में आदि।

### (ii) शारीरिक-गतिक विकास

बच्चों में गतिक खेल क्रियाकलापों के प्रति स्वाभाविक झुकाव पाया जाता है। इसलिए स्कूल के कार्यक्रम में सदैव खेलों के लिए पर्याप्त समय सम्मिलित किया जाना चाहिए। खेल बच्चों के स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास को प्रोत्साहित करते हैं। इसके अतिरिक्त सहयोग, अपनी बारी की प्रतीक्षा करना, नेतृत्व का गुण आदि अच्छी सामाजिक आदतों को विकसित करने में भी सहायक होते हैं।

### (iii) सृजनात्मक एवं सौंदर्यात्मक विकास

प्रारंभ में बच्चों को लिखना कठिन लगता है। औपचारिक लेखन शुरू करने से पहले यह आवश्यक है कि एक तत्परता कार्यक्रम की योजना बनायी जाए। यह देखा गया है कि बच्चों जब लिखना आरंभ करते हैं, तो उन्हें पेंसिल को ठीक प्रकार से पकड़ने एवं कागज पर उसका प्रयोग करने में कठिनाई होती है। इसका कारण यह है कि उनके हाथ एवं अंगुलियों की मांसपेशियाँ में तब तक उचित समन्वय नहीं होता है। सृजनात्मक गतिविधियाँ जैसे कि रंग भरना, चित्र बनाना, शिल्पकला आदि मांसपेशियों को नियंत्रित करने एवं उचित गतिक विकास में सहायक होती हैं।

*कागज फाड़ना और चिपकाना, पत्तियां चिपकाना, गीली सतह पर अथवा स्वॉक की सहायता से चित्र बनाना आदि रचनात्मक गतिविधियाँ लिखने की तत्परता विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। शिक्षक को, उपलब्ध सामग्री पर आधारित विभिन्न गतिविधियों से बच्चों को परिचित कराना चाहिए। इस प्रकार की गतिविधियाँ करवाकर वे न केवल मांसपेशियों पर अच्छा नियंत्रण विकसित करते हैं, बल्कि उनमें कल्पना शक्ति, सौंदर्यात्मक प्रशंसा एवं सामाजिक कौशलों को भी विकसित करते हैं।*

## पाठगत प्रश्न 19.4

कॉलम अ का कॉलम ब से मिलान सही कीजिए–

| कॉलम अ | कॉलम ब |
|---|---|
| 1. भाषा विकास | (क) इनडोर एवं आउटडोर खेल |
| 2. पढ़ने की तत्परता | (ख) चित्र बनाना, बिंदुओं को मिलाना |
| 3. लिखने की तत्परता | (ग) कहानी कथन, लयबद्ध गीत |
| 4. संख्या तत्परता | (घ) दृश्य भेद |
| 5. गतिक विकास | (ङ) वस्तुओं का वर्गीकरण |

## आपने क्या सीखा

इस पाठ में आपने सीखा–

- पारगमन : अर्थ एवं महत्व
- पारगमन को प्रभावित करने वाले तत्व
  - बच्चों की विशेषताएँ
  - अभिभावकों की विशेषताएँ
  - समुदाय की विशेषताएँ
- घर से स्कूल में पारगमन
- प्रीस्कूल से स्कूल में पारगमन
- अभिभावकों एवं बच्चों हेतु पारगमन गतिविधियाँ
- सूक्ष्म पारगमन के लाभ
- तत्परता : अर्थ, महत्व एवं घटक
- तत्परता का महत्व एवं घटक
- अभिभावकों हेतु तत्परता गतिविधियाँ
- अभिभावकों, स्कूलों, शिक्षकों एवं अन्य देखभालकर्ताओं की भूमिका
  - तैयार बच्चे

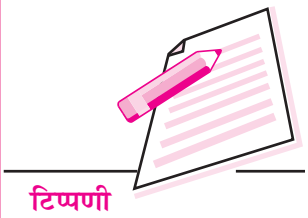

टिप्पणी

- तैयार अभिभावक, परिवार एवं समुदाय
- तैयार स्कूल
- तैयार शिक्षक एवं अन्य कार्यकर्ता

- स्कूल तत्परता के विभन्न घटकों हेतु गतिविधियों की योजना एवं रूपरेखा

## पाठान्त प्रश्न

1. स्कूल में अनुदेशनात्मक सहयोग हेतु आवश्यक तत्परता कौशलों एवं व्यवहारों की सूची बनाइए।
2. सुगम पारगमन जिन संबंधों पर निर्भर करता है, उनका संक्षेप में वर्णन कीजिए।
3. सफल पारगमन के क्या लक्षण हैं?
4. तैयार अभिभावक, स्कूल, शिक्षक एवं समुदाय से आपका क्या आशय है?
5. बच्चों का भाषायी विकास सुनिश्चित करने हेतु अभिभावकों द्वारा की जाने वाली गतिविधियों की उनकी सूची बनाइए।
6. लिखने, पढ़ने एवं संख्या की तत्परता सुनिश्चित करने हेतु अभिभावकों द्वारा की जाने वाली गतिविधियों की सूची बनाइए।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

**19.1**

1. सही, 2. सही, 3. गलत 4. गलत

**19.2**

1. अभिमुखीकरण
2. प्रक्रियाओं
3. स्कूल तत्परता
4. विशेषताओं
5. तैयार

**19.3**

(a) **शैक्षणिक तत्परता :** बच्चे अपने विषय में, अपने परिवारों और अपने आस-पास की दुनिया के बारे में मूलभूत जानकारी रखते हैं।

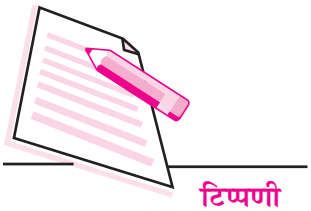

टिप्पणी

(b) **सामाजिक तत्परता :** बच्चे दूसरे बच्चों के साथ मेलजोल करने, निर्देशों का पालन करने, अपनी बारी लेने में सक्षम हैं।

(c) **आत्मा-निर्भरता :** जब बच्चे मूलभूत कार्यों को स्वयं की सहायता से पूरा करते हैं।

(d) **स्वास्थ्य एवं शारीरिक देखभाल :** बच्चे शारीरिक रूप से स्कूल जाने के लिए तैयार हैं।

(e) **संप्रेषण कौशल :** बच्चे दुनिया के विषय में क्या जानते और समझते हैं यह बताते हैं।

**19.4**

1. (क)   2. (ख)   3. (ग)   4. (घ)   5. (ङ)

## सन्दर्भ


- Ministry of Women and Child Development. (2013). *National Curriculum Framework for ECCE, 2013*. New Delhi: Government of India.
- Ministry of Women and Child Development. (2013b). *National Early Childhood Care and Education Policy 2013*. New Delhi: Government of India.
- National Council of Educational Research and Training. (2006). *Position Paper National Focus Group on Early Childhood Education*. New Delhi: NCERT
- Ministry of Women and Child Development (MWCD). Quality Standards for Early Childhood Care and Education (ECCE). New Delhi: Government of India.
- Ministry of Women and Child Development (MWCD). National Early Childhood Care and Education (ECCE) Curriculum Framework. New Delhi: Government of India.
- National Council of Educational Research and Training. (2005). *National Curriculum Framework, 2005.* New Delhi: NCERT.